प्राचीन भारत का इतिहास

1435

लेखक
डाक्टर रमाशंकर त्रिपाठी, एम.ए., पी-एच. डी. (लण्डन)
भूतपूर्व यूनिवर्सिटी प्रोफेसर व अध्यक्ष, इतिहास विभाग,
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी;
अपितु
"हिस्ट्री आफ कन्नौज" तथा "हिस्ट्री आफ एंश्येंट इंडिया"

प्रकाशक :
मो ती ला ल ब ना र सी दा स
दिल्ली :: वाराणसी :: पटना

विषय-सूची

समर्पण..

प्रस्तावना..

संक्षिप्त पदों की सूची...

खंड १

अध्याय १

प्रवेशक

सामग्री

इतिहास का अभाव—१; साहित्यिक सामग्री-अनैतिहासिक ग्रन्थ-२; इतिहासपरक साहित्य-३-४; विदेशी वृत्तान्त-४-६; पुरातत्व-सम्बन्धी सामग्री अभिलेख-६-७; सिक्के-७-८; इमारतें-८-६; निष्कर्ष-६ ।

अध्याय २

प्रकरण १

पूर्व-प्रस्तर-युग-१०-११;

प्रकरण २

उत्तर-प्रस्तर-युग-११-१२;

प्रकरण ३

(१) धातुओं का उपयोग-१२-१३; (२) द्रविड़-१३;

प्रकरण ४

प्रस्तर-धातु युग—नई खोजों का महत्व-१४; इमारतें-१४-१५; कृषि-१५; आहार-१५; पशु-१५-१६; पत्थर और धातुएँ-१६; आभूषण-१६; बर्तन-भाण्ड आदि-१६; अस्त्र-

शस्त्र-१६; बटखरे-१६-१७; खिलौने-१७, कातना-बुनना-१७; वसन-१७; धर्म-१७-१८; मृतक-संस्कार १८; लेखन-शैली-१८-१९; कला-१९; सैन्धव-सभ्यता के निर्माता-१९-२०; मूल और प्रसार-२०; काल-२०-२१।

अध्याय ३

ऋग्वैदिक काल

आर्यों का आदि स्थान-२२-२३; ऋग्वेद-२३; ऋग्वैदिक आर्यों की भौगोलिक पृष्ठभूमि-२४; आर्यों के कबीले और पारस्परिक युद्ध-२४-२६; आर्यों का राजनैतिक संगठन-२६; पारिवारिक जीवन-२६-२७; व्यवसाय-२७-२८ व्यापार-२८-२९; वसना-भूषण और शृंगार-२९; आहार-२९; पेय-२९; मनोरंजन-२९-३०; धर्म-३०-३१; ऋग्वेद का समय-३१-३२; सैन्धव और ऋग्वैदिक सभ्यताओं की विषमताएँ-३२-३३।

अध्याय ४

उत्तर-वैदिक-काल

भौगोलिक सीमाओं का विस्तार-३४; सुस्थित आवास-३५; जन-संगठन-३५; जनपद-राज्यों का अभ्युदय-३५-३६; राजा-३६-३७; राजनैतिक विभाग और घटनाएँ-३७-३९; सामाजिक परिवर्तन-३९-४०; शूद्र और नारी की अवस्था-४०; व्यवसाय-४०-४१; अन्य विशेपताएँ-४१-४२; धर्म और दर्शन-४२-४३; ज्ञान का विकास-४३-४४।

अध्याय ५

सूत्रों, काव्यों और धर्म-शास्त्रों की सामग्री

प्रकरण १

सूत्र ग्रन्थ—सूत्र-शैली-४५; काल-४६, पाणिनि और उनका व्याकरण-४५-४६; सूत्र ग्रथ-४६; श्रौत सूत्र-४६; गृह्यसूत्र-४७; धर्म सूत्र-४७-४८; समाज की व्यवस्था-४८; राज धर्म-४८-४९; कर-विधान-४९; व्यवहार (कानून)-४९।

प्रकरण २

रामायण-महाभारत काल—काव्यों का उदय-४९-५०; रामायण: इसकी कथा-५०; रामायण का काल—५०-५१; रामायण की ऐतिहासिकता—५१-५२; महाभारत : इसका काल—५२-५३; महाभारत की संक्षिप्त कथा—५३; महाभारत का

ऐतिह्य—५३-५५; महाकाव्यों की सामग्री—५५; (क) राजा—५५; (ख) शासन—५६; (ग) सेना—५६; (घ) गण—५६; (ङ) प्रजा—५७; (च) धर्म—५८।

प्रकरण ३

धर्मशास्त्र—५८; समाज: वर्ण—५८-५९; आश्रम—५९; समाज में नारी का स्थान—५९-६०; राष्ट्र—६०-६२; न्याय—६२-६३; कर-ग्रहण—६३; पेशे और व्यापार—६३-६४।

खंड २

अध्याय ६

बुद्ध काल

प्रकरण १

बौद्ध-धर्म के उदय के शीघ्र-पूर्व भारत—६५-६७।

प्रकरण २

(क) अराजक गण-राज्य—६७-६८; शाक्यों आदि के विषय में कुछ ज्ञातव्य बातें—६९-७०;

(ख) राजतन्त्रीय राज्य—७०-७६

१—वत्स का राज्य—७०-७१

२—अवन्ति—७१-७२

३—कोशल—पसेनदि, विडुडाभ—७२-७३

४—मगध—बिम्बिसार, अजातशत्रु—७३-७६

प्रकरण ३

धार्मिक आन्दोलन—७६; महावीर का इतिहास—७७; मुख्य जैन सिद्धान्त-७७-७८; बुद्ध का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त—७८-७९; बुद्ध के निर्वाण की तिथि-७९; बुद्ध के उपदेश—७९-८०; जैन और बौद्ध धर्मों की पारस्परिक समानताएँ-विषमताएँ—८०-८१।

प्रकरण ४

आर्थिक दशा—ग्राम संगठन—८१-८२; नगर—८१; शिल्प-कलायें—८२-८३; श्रेणियाँ—८३; वाणिज्य और वणिक्पथ—८३; सिक्के—८३-८४।

अजातशत्रु के उत्तराधिकारी—

उदायिन्, दर्शक आदि—८४-८५; नन्द—८५; नन्दों का मूल—८५; महापद्म-

CamScanner

८५-८६; महापद्म के उत्तराधिकारी—८६-८७; तिथि—८७। परिशिष्ठ—नन्दों के पूर्ववर्ती शासकों की वंशसूची—८८।

अध्याय ७

विदेशों से सम्पर्क

प्रकरण १

ईरानी आक्रमण—कुरुष, दारयवौष प्रथम—८९; क्षयार्षा—९०; फारसी संपर्क का परिणाम—९०।

प्रकरण २

सिकन्दर का आक्रमण—सिकन्दर की पूर्वाभिमुख सतर्क प्रगति—९०-९१; अस्पसिओई पर विजय—९१; नीसा—९२; अस्सकेनोइयों की पराजय—९२-९३; उत्तर-पश्चिमी भारत की राजनैतिक स्थिति—९३-९४; तक्षशिला और अभिसार—९४; पोरस—९५; सिकन्दर और पोरस-९५-९६; पोरस की पराजय के कारण-९६-९७; पोरस का सम्मान—९७-९८; नगर का निर्माण—९८; ग्लाउसाई और कनिष्ठ पोरस की पराजय—९८-९९; पिंप्रमा पर अधिकार—९९; संगल-ध्वंस—९९; ग्रीक सेना का आगे बढ़ने से इन्कार करना—१००; विद्रोह के कारण—१००-१०२; सिकन्दर की अपील—१०२; सेना निरुत्तर—१०२-१०३; वेदिका-स्तंभ-१०३; ग्रीक लौटे : शासन की व्यवस्था—१०३-१०४; सोफाइटिज—१०४; जलयात्रा – १०४; सिबोई और अगलसी—१०४-१०५; मालव और क्षुद्रक –१०५-१०६; अवस्तनोइयों का पराभव—१०७; सिन्धु के निचले काँठे की विजय—१०७; मौसिकनस—१०७; ब्राह्मण विरोध—१०७-१०८; पत्तल—१०८; यात्रा का अन्त—१०८-१०९; निष्कर्ष—१०९; सिकन्दर की व्यवस्था—१०९; आक्रमण का परिणाम—११०; समाज और धर्म—११०; आर्थिक दशा—११०-१११।

अध्याय ८

प्रकरण १

चन्द्रगुप्त मौर्य-वंश—११२; उसका उत्कर्ष—११२-११३; नन्द-शक्ति का ध्वंस और चन्द्रगुप्त का राज्यारोहण—११३-११४; दिग्विजय—११४; सिल्यूकस से युद्ध—११४-११५; मेगस्थनीज़ और कौटिल्य—११५; शासन-व्यवस्था—११६; साम्राज्य (केन्द्रीय) शासन—११६-११७; प्रान्तीय शासन—११७-११८; नगर-शासन—११८-११९; पाटलिपुत्र—११९; जनपद (देहात) शासन—११९;

दंडनीति (जाब्ता फौजदारी)—११९ ; सिंचाई—१२० ; आय-व्यय के साधन—१२० ; मेगस्थनीज और वर्ग—१२०-१२१ ; राजप्रासाद—१२१ ; उसका व्यक्तिगत जीवन—१२१ ; चन्द्रगुप्त का अन्त—१२२।

प्रकरण २

बिन्दुसार—चन्दगुप्त का उत्तराधिकारी—१२२ ; दक्षिण विजय—१२३, विद्रोह—१२३, विदेश से संपर्क—१२३।

अध्याय ९

१. अशोक

प्रकरण १

राज्यारोहण—१२४ ; राज्य के लिये गृह-कलह—१२४-१२५ ; कलिंग युद्ध—१२५ ; अशोक का व्यक्तिगत धर्म—१२५-१२६ ; अशोक की सहिष्णुता—१२६ ; उसका 'धम्म'—१२७ ; विशेषताएँ—१२७-१२८ ; धर्म-प्रचार के उद्योग—१२८ ; मानव कल्याण के कार्य—१२८-१२९ ; तृतीय बौद्ध संगीति—१२९-१३० ; साम्राज्य-विस्तार १३०-१३१; शासन-प्रबन्ध—१३१-१३२; शासन-सुधार—१३२-१३३; समाज—१३३; इमारतें—१३३-१३४; अशोक के अभिलेख—१३४-१३५: अशोक का चरित्र—१३५-१३६।

प्रकरण २

अशोक के उत्तराधिकारी—१३६-१३७; मौर्यों के पतन के कारण—१३७; परिशिष्ट १—द्वादश शिलालेख (सहिष्णुता अभिलेख) का अनुवाद—१३८; परिशिष्ट २—मौर्यों की वंशतालिका—१३९।

अध्याय १०

१. ब्राह्मण साम्राज्य

प्रकरण १

शुंग साम्राज्य—मौर्य वंश का अन्त—१४०; शुंग कौन थे? १४१; घटनायें—१४१-१४२; राज्य का विस्तार—१४२-१४३; पुष्यमित्र की दमन नीति—१४३; पुष्यमित्र के उत्तराधिकारी—१४३; शुंगकालीन धर्म, कला और साहित्य—१४३-१४४।

प्रकरण २

कण्व-कुल—कण्वों का उदय काल—१४४

परिशिष्ट १—शुंग राजाओं की तालिका—१४४

परिशिष्ट २—काण्व (कण्व) अथवा काण्वायन राजा—१४५

प्रकरण ३

सातवाहन-कुल—उदय की तिथि—१४६; आन्ध्र अथवा सातवाहन ? १४६-१४७; सातवाहनों का मूल—१४७; इस कुल के राजा—१४८; गौतमीपुत्र शातकर्णी—१४८-१४९; वाशिष्ठिपुत्र श्रीपुलमावि—१४९; यज्ञश्री शातकर्णी—१४९-१५०; सातवाहनों के शासन में दक्खन की दशा—१५०; समाज—१५०; धर्म—१५१; आर्थिक परिस्थिति—१५१; साहित्य—१५१-१५२।

२. कलिंगराज खारवेल

तिथि-क्रम पर विचार—१५२; घटनाएँ—१५२-१५३।

अध्याय ११

१. विदेशी आक्रमणों का युग

प्रकरण १

इण्डो-ग्रीक—पार्थिया और बैक्ट्रिया के विद्रोह—१५४; आर्सेकीज, डियोडोटस प्रथम, डियोडोटस द्वितीय—१५४; यूथिडेमस, ऐन्टियोकस तृतीय का आक्रमण—१५५; बाख्त्री-ग्रीकों की भारत-विजय—१५५; डेमिट्रियस—१५५; युक्रेटाइड्ज का विद्रोह—१५६; विभाजन—१५६; युथिडेमस का राजकुल—१५७; मिनेन्डर—१५७-१५८; युक्रेटाइड्ज का राजकुल—१५८; हेलिओक्लीज—१५८; ऐन्टिआल्किडस—१५८; हर्मियस—१५९; ग्रीक सम्पर्क का प्रभाव—१५९-१६१।

प्रकरण २

शक-पह्लव—शक संक्रमण—१६१-१६२; १. माउस—१६२-१६३; उसके उत्तराधिकारी—१६३; २. उत्तर-पश्चिम के क्षत्रप—१६३-१६४; ३. मथुरा के क्षत्रप—१६४; ४. महाराष्ट्र के छहरात—१६४-१६५; नहपान—१६५; ५. उज्जैन के क्षत्रप—ष्टन—१६५-१६६; रुद्रदामन—१६६-१६७; रुद्रदामन के उत्तराधिकारी—१६७; पह्लव-वोनोनिस—१६७; स्पलिराइसिस—१६७; गोन्डोफरनिस—१६८।

करण ३

कुषाण—युह्-ची-संक्रमण—१६८-१६९; पाँच कबीले अथवा प्रांत-१६९; कुजूल ाइसिस-१६९-१७०; वीम कडफाइसिस-१७०; कनिष्क—उसकी तिथि-१७०-१७१; जय-१७१—१७२; जमानत—१७२; कनिष्क का साम्राज्य-विस्तार-१७२-१७३;

उसकी राजधानी-१७३; उसके क्षत्रप-१७३; कनिष्क के निर्माण-कार्य-१७३-१७४; उसका धर्म—१७४; बौद्ध संगीति—१७४-१७५; महायान का उदय—१७५; गन्धार कला—१७५-१७६; कनिष्क की राजसभा—१७६; उसकी मृत्यु—१७६; वासिष्क—१७६; हुविष्क—१७७; वासुदेव—१७७-१७८; कुषाण-साम्राज्य का पतन—१७८; अन्धकार युग—१७८-१७९।

खंड ३

अध्याय १२

१. गुप्त साम्राज्य

गुप्तों का मूल—१८०, गुप्त शक्ति का आरम्भ—१८०-१८१; चन्द्रगुप्त प्रथम—१८१-१८२; समुद्रगुप्त—१८२; प्रयाग स्तम्भ लेख—१८२-१८३; दिग्विजय—१८३-१८६; विजय की मात्रायें—१८६; परराष्ट्रों से सम्बन्ध—१८६-१८७; अश्वमेध—१८७-१८८; व्यक्तिगत गुण—१८८; उसका धर्म—१८८; उसकी मृत्यु-तिथि—१८८-१८९; रामगुप्त—१८९; चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य—राज्यारोहण—१८९-१९०; साम्राज्य की व्यवस्था—१९०; वाकाटक सन्धि—१९०; शक युद्ध—१९०-१९१; युद्ध का परिणाम—१९१; चन्द्र कौन था ?—१९१-१९२; फाह्यान की यात्रा—१९२-१९३; पाटलिपुत्र—१९३; समाज की अवस्था—१९३-१९४; धार्मिक स्थिति—१९४; गुप्त शासन—१९४-१९५; अभिलेखों की सामग्री—१९५-१९६; परिवार—१९६; विरुद—१९६; कुमारगुप्त प्रथम महेन्द्रादित्य—राज्यारोहण की तिथि—१९६; उसकी शक्ति—१९७; अश्वमेध—१९७; पुष्यमित्र युद्ध—१९७; धार्मिक स्थिति—१९७-१९८; स्कन्दगुप्त-क्रमादित्य—प्रारम्भिक मुसीबतें—१९८; हूण आक्रमण—१९८-१९९; सुदर्शन ह्रद—१९९; धर्म—१९९; उपाधियाँ—२००; तिथि—२००; पश्चात्कालीन सम्राट—२००; नरसिंहगुप्त—२००; कुमारगुप्त द्वितीय—२००-२०१; बुधगुप्त—२०१; भानुगुप्त—२०१-२०२; गुप्त सम्राटों की वंश-सूची—२०२।

अध्याय १३

गुप्तकालीन संस्कृति और नयी शक्तियों का उदय

प्रकरण १

शालीन युग—२०३; धर्म—ब्राह्मण धर्म—२०३-२०४; बौद्ध धर्म—२०४;

जैन धर्म—२०४; धार्मिक दान—२०५; संस्कृत का पुनरुद्धार—२०५; साहित्य का विकास—२०५-२०६; शिक्षा—२०६-२०७; वास्तु—२०७-२०८; तक्षण-कला (भास्कर्य) —२०८; चित्रकला—२०८; धातु कला—२०८-२०९; इस सक्रियता के कारण—२०९।

प्रकरण २

वाकाटक—उनकी महानता—२०९; वाकाटकों का मूल और उनके नाम की व्युत्पत्ति—२०९-२१०; इस राजकुल के मुख्य राजा—२१०-२११।

प्रकरण ३

हूण और यशोधर्मन—हूण-संक्रमण—२११; गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण—२११; तोरमाण—२११; मिहिरकुल—२१२-२१३; यशोधर्मन्—२१३; मिहिरकुल की मृत्यु—२१३।

प्रकरण ४

वलभी के राजा—राजकुल की प्रतिष्ठा—२१४; मूल-२१४; शक्ति का विकास—ध्रुवसेन द्वितीय—२१४-२१५; धरसैन चतुर्थ—२१५; पश्चात्कालीन इतिहास—२१५।

प्रकरण ५

मगध के उत्तरकालीन गुप्त—२१६-२१७।

प्रकरण ६

मौखरी—प्राचीनता—२१७; मूल—२१७-२१८; उनकी शाखायें—२१८-२१९

अध्याय १४

थानेश्वर और कन्नौज का हर्षवर्धन

सामग्री का बाहुल्य—२२०; हर्ष के पूर्वज—२२०-२२१; प्रारम्भिक पारि स्थिति—२२१-२२३; वर्ष की दिग्विजय का तिथिक्रम—२२३-२२४; साम्राज्य की सीमाएँ—२२५-२२६; शासन प्रणाली—२२६; सैन्य शक्ति—२२७; मैत्री—२२७; हर्ष का व्यक्तिगत शासन-श्रम २२७; गृह-शासन—२२८; प्रादेशिक विभाग और प्रान्तीय शासन—२२८; शासन के अन्यरूप—२२९; दण्ड विधान - २२९; कन्नौज का गौरव—२२९-२३०; कन्नौज की सभा—२३०-२३१; प्रयाग के पंचवर्षीय वितरण—२३१-२३२; युवान-च्वाँग का प्रस्थान—२३२; हर्ष का धर्म—२३२-२३३; देश की धार्मिक स्थिति—२३३-२३४; विद्या का संरक्षक हर्ष - २३४; हर्ष की रचनायें—२३४-२३५; हर्ष की मृत्यु और उसका परिणाम— २३५-२३६।

अध्याय १५

हर्षोत्तर और मुस्लिम-पूर्व का उत्तर भारत

(६४७ ई० से लगभग १२०० ई० तक)

प्रकरण १

कन्नौज का राज्य

१. यशोवर्मन्—२३६.

२. आयुध-राजकुल—२३७; वज्रायुध—२३८; इन्द्रायुध—२३८; चक्रायुध—२३८.

३. प्रतीहार सम्राट्—मूल—२३८-२३९; मूल-स्थान -२३९; शक्ति का आरंभ—२३९-२४०; नागभट द्वितीय (लगभग ८०५-३३ ई०)—२४०; मिहिर भोज (लगभग ८३६-८५ ई०)—२४०-२४१; महेन्द्रपाल प्रथम (लगभग ८८५-९१० ई०)—२४१-२४२; महीपाल (लगभग ९१२-९४४ ई०)—२४२-२४३; महीपाल के उत्तराधिकारी (९४४-१०३६ ई०)—२४३-२४४।

४. गाहड़वाल

अराजक परिस्थिति—२४४-२४५; मूल—२४५; चन्द्रदेव- २४५; गोविन्दचन्द्र—२४५-२४६; विजयचंद्र—२४६; जयचंद्र—२४६-२४७; हरिश्चंद्र-२४७; श्रीहर्ष—२४७।

प्रकरण २

नैपाल-विस्तार—२४८; वाह्य संपर्क—२४८; अंशुवर्मन्—२४८-२४९; बौद्ध धर्म—२४९।

प्रकरण ३

शाकम्भरी के चाहमान—मूल—२५०; इस कुल के प्रधान राजा—अजयराज-२५०; विग्रहराज चतुर्थ वीसलदेव—२५०; पृथ्वीराज तृतीय—२५१—२५२।

प्रकरण ४

सिन्ध-विस्तार—२५२; सामग्री की स्वल्पता—२५२; राय कुल—२५२; छछ का राजकुल—२५२; मुस्लिम आक्रमण—२५२-२५३; इस सम्पर्क का परिणाम-२५३; उत्तरकालीन इतिहास—२५३-२५४।

प्रकरण ५

काबुल और पंजाब के शाही—तुर्की शाही—२५४; हिन्दू शाही—२५५; जयपाल—२५५; आनन्दपाल—२५५।

प्रकरण ६

कश्मीर—भौगोलिक विस्तार—२५६-२५७; पूर्वकालीन इतिहास—२५७; कर-

कोटक राजकुल-दुर्लभवर्धन—२४७; ललितादित्य मुक्तापीड—२४८; जयापीड विनयादित्य—२४८; उत्पल राजकुल-अवन्तिवर्मन्—२४८-२४९; शंकरवर्मन्—२४९; उत्तरकालीन उत्पल—२४९-२६०; पर्वगुप्त का कुल—२६०; लोहर राज कुल—२६०-२६१।

अध्याय १६

उत्तर भारत के मध्यकालीन हिन्दू राजकुल (क्रमागत)

प्रकरण १

आसाम—कामरूप का विस्तार—२६२; पौराणिक राज्य-२६२; प्राचीन अभिलेखों की सामग्री—२६२-२६३; भास्करवर्मन्—२६३; उत्तरकालीन इतिहास—२६३-२६४; पाल आक्रमण—२६४; विदेशी आक्रमण—२६४; धर्म—२६४।

प्रकरण २

पाल राजकुल—बंगाल का पूर्व-वृत्तान्त-२६५; पाल कौन थे ? २६६; गोपाल-२६६; धर्मपाल—२६६-२६७; देवपाल—२६७-२६८; नारायणपाल—२६८; महीपाल प्रथम—२६८-२६९; नयपाल-२६९; नयपाल के उत्तराधिकारी—२६९-२७०; रामपाल—२७०; पाल राजकुल का अन्त—२७०-२७१; पालों के कार्य—२७१।

प्रकरण ३

सेन राजकुल—मूल—२७१-२७२; विजयसेन—२७२; बल्लालसेन—२७२-२७३; लक्ष्मणसेन—२७३-२७४।

प्रकरण ४

कलिंग और ओड्र—विस्तार—२७४; सामग्री की स्वल्पता—२७४; केशरियों के कलात्मक निर्माण-कार्य—२७४-२७५; पूर्वीय गंग—२७५।

प्रकरण ५

त्रिपुरी के कलचुरी—उनका वंश—२७५-२७६; कोकल्ल प्रथम—२७६; गांगेयदेव—२७६-२७७; लक्ष्मीकर्ण—२७७-२७८; कर्ण के उत्तराधिकारी—२७८।

प्रकरण ६

जेजाकभुक्ति (बुन्देल खण्ड) के चन्देल—उनका आरंभ—२७८; शक्ति का आरंभ—२७९; धंग—२७९-२८०; गंड—२८०; कीर्तिवर्मन्—२८०-२८१; मदनवर्मन्—२८१; परमार्दि—२८१; चन्देल नगर और झील—२८१-२८२।

प्रकरण ७

मालवा के परमार—परमार कौन थे ?—२८२; उनकी शक्ति का आरंभ—२८२-२८३; वाक्पति-मुञ्ज—२८३-२८४; सिन्धुराज—२८४; भोज—२८४-२८६; इस राजकुल का उत्तरकाल—२८६-२८७।

प्रकरण ८

अन्हिलवाड का चालुक्य राजकुल-प्रतिष्ठाता का कुल—२८७-२८८; भीम प्रथम—२८८-२८९; कर्ण—२८९; जयसिंह सिद्धराज—२८९; कुमारपाल—२८९-२९०; गुजरात का उत्तरकालीन इतिहास—२९०-२९१।

खंड ४

अध्याय १७

दक्षिणापथ के राजकुल

प्रकरण १

बातापी (बादामी) के चालुक्य—दक्षिणापथ की व्याख्या—२९२; पूर्वेतिहास—२९२-२९६; चालुक्य कौन थे ?—२९३-२९४; उनका उत्कर्ष—२९४-२९५; पुलकेशिन् द्वितीय—२९५-२९७; राजनीतिक दौत्य—२९७; युआन च्वांग का प्रमाण—२९७; कष्ट का अन्त—२९७; पुलकेशिन द्वितीय के उत्तराधिकारी—२९८-२९९; धर्म और कला संरक्षण—२९९।

प्रकरण २

मान्यखेट (मालखेड) के राष्ट्रकूट—राष्ट्रकूटों का कुल—३००; उनका मूलस्थान—३००; राष्ट्रकूटों का उत्कर्ष ३०१-३०२; राष्ट्रकूट साम्राज्य का विस्तार—३०२; (क) गोविंद द्वितीय—३०२; (ख) ध्रुव निरुपम—३०२-३०३; (ग) गोविंद तृतीय जगत्तुंग—३०३-३०४; अमोघवर्ष प्रथम—३०४-३०५; अमोघवर्ष के उत्तराधिकारी—३०५-३०७; कृष्ण तृतीय—३०७-३०८; राष्ट्रकूट राजकुल का पतन—३०८-३०९; राष्ट्रकूट और अरब—३०९; धार्मिक स्थिति—३०९-३१०।

प्रकरण ३

कल्याण के पश्चिमी चालुक्य—तैलप का वंश—३१०; उसके कृत्य—३१०-३११; लगभग ९९७ से १०४२ ई० तक—३११-३१२; सोमेश्वर प्रथम आहवमल्ल (१०४२-१०६८ ई०)—३१२-३१३; सोमेश्वर द्वितीय भुवनैकमल्ल—३१३-३१४, विक्रमादित्य षष्ठम् त्रिभुवनमल्ल (१०७६-११२६ ई०)—३१४-३१५; उत्तरकालीन नृपति—३१५; कलचुरी अन्तराधिपत्य—३१५-३१६।

प्रकरण ४

देवगिरि के यादव नरेश—यादवों का मूल और उत्कर्ष—३१६-३१७; सिंघण—३१७; उत्तरकालीन यादव नृपति—३१७-३१८; मुस्लिम आक्रमण—३१८।

प्रकरण ५

वारंगल के काकतीय—आरम्भ—३१९; उनका संक्षिप्त वृत्तांत—३१९-३२०;

प्रकरण ६

शिलाहार राजकुल—मूल-३२०; इतिहास—३२०।

प्रकरण ७

कदम्ब कुल—व्युत्पत्ति-३२१; इतिहास—३२१-३२२।

प्रकरण ८

तलकाड के गंग—वंश-३२२; संक्षिप्त वृत्तान्त—३२३।

प्रकरण ९

द्वारसमुद्र के होयसल-नाम और पूर्वज—३२३; ऐतिहासिक वृत्तान्त—३२३-३२४।

अध्याय १८

सुदूर दक्षिण के राज्य

प्रकरण १

प्रारम्भिक वृत्तान्त—३२५-३२७।

प्रकरण २

काञ्ची के पल्लव—पल्लव कौन थे?—३२७-३२८; पल्लव शक्ति का आरंभ—३२९; संस्कृत अभिलेखों के पल्लव—३२९-३३०; महान् पल्लव राजा-सिंहविष्णु—३३०; महेन्द्रवर्मन्—३३०-३३१; नरसिंहवर्मन् प्रथम—३३२-३३३; परमेश्वरवर्मन् प्रथम—३३३; नरसिंहवर्मन् द्वितीय—३३३-३३४; नन्दिवर्मन् और उसके उत्तराधिकारी ३३४-३३५; पल्लव शासन पद्धति—३३५-३३६; साहित्य—३३६; धर्म—३३७; कला—३३७।

प्रकरण ३

चोड़ राजकुल—व्युत्पत्ति—३३८; उनका देश और उनके नगर—३३८, प्रारम्भिक इतिहास—३३८-३४०; चोड़ सम्राट-विजयालय—३४०; आदित्य प्रथम—३४०; परान्तक प्रथम—३४०-३४१; ह्रास का युग—३४१; राजराज प्रथम (ल० ९८५-१०१४ ई०)—३४१-३४३; राजेन्द्र प्रथम गंगइ कोन्ड (ल० १०१४-१०१४ ई०)

—३४३-३४५; राजाधिराज प्रथम (ल० १०४४-१०५२ ई०)—३४५; राजेंद्र (देव) द्वितीय (ल० १०५२-६३ ई०)—३४५-३४६; वीर-राजेंद्र (ल० १०६३-७० ई०)—३४६; अधिराजेंद्र (ल० १०७० ई०)—३४६; कुलोत्तुंग प्रथम (ल० १०७०-११२२)—३४७-३४८; कुलोत्तुंग प्रथम के उत्तराधिकारी—३४८-३४९; चोड़ शासन—राजा और उसके कर्मचारी—३५०; प्रादेशिक विभाजन—३५०; सभायें—३५०-३५२; भूमि का माप—३५२; 'आयम्' के साधन—३५२-३५३; व्यय—३५३; सेना—३५३; चोड़ों के निर्माण-कार्य—३५३; सड़कें—३५३-३५४; नगर और मन्दिर आदि-३५४; कला—३५४; धर्म ३५४-३५५।

प्रकरण ४

मदुरा के पाण्ड्य—आरम्भ-३५५; पाण्ड्यभूमि-३५६; प्रारम्भिक वृत्तांत-३५६-३५७; अन्धकार का युग—३५७; उत्कर्ष का काल—३५७-३५८; चोड़ आधिपत्य—३५८-३५९; समृद्धि का उत्तरकाल—३५९-३६१; परिशिष्ट—युआन च्वाँग का वृत्तांत—३६१।

प्रकरण ५

चेर राजकुल—उनका मूल—३६१; इतिहास—३६२-३६३।